जितेन्द्र जैन वाडमेर का अनुपम सहयोग हमें मिला। उन्होंने परिपत्र की भाषा बनाई। यह परिपत्र हम दोनों की ओर से समस्त राजनेतिक नेताओं, जैन धर्म के विद्वानों व श्री संघों को जारी किया गया। इस अंग्रेजी परिपत्र के साथ साध्वी श्री स्वर्ण अभिनंदन ग्रंथ का परिचय लगाया गया। इस परिचय में उनका संक्षिप्त जीवन, दीक्षा प्रसंग, साहित्य कार्य, समाज सुधार के कार्य का परिचय लिखा गया था। इस परिपत्र के बहुत अच्छा परिणाम निकला। हमें देश के विभिन्न नेताओं के संदेश प्राप्त होने लगे। साधू-साध्वीयों के सस्मरण लेख आने लगे।

इस ग्रंथ में शोध निबंधों के लिए आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज का सहयोग हम नहीं भूला सकते। उन्होंने अपने संपर्क के लेखकों का अभूतपूर्व सहयोग दिलवाया। हमारा संपर्क कुछ भारतीय व विदेशी लेखकों से था। उन सब के शोध निबंध हमें प्राप्त होने लगे।

हमें भी अपनी ओर से एक शोध निबंध लिखना था। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज पर हमने अलग से लिखना था। जो कि सस्मरण की तरह थे। अब हमारे मालेरकोटला घर पर रोजाना डाक आने लगी। कुछ निबंध अम्बाला में भी आने लगे, क्योंकि परिपत्र पर वहां का पता भी था।

अभिनंदन ग्रंथ का कार्य तेजी से चलने लगा। एक तरफ अर्थ व्यवस्था का प्रबंध हो रहा था दूसरी ओर जैन जगत के विद्वानों के लेखों का प्रबंध करने में हम जुट गए। आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने डा० तेज सिंह गौड़ से इन के माध्यम से हमें मध्य प्रदेश, गुजरात, उतरप्रदेश, दिल्ली के लेखकों ने शोध निबंध प्राप्त होने लगा। यह निबंध हर विषय पर थे। इसी समय अर्हत वचन के

सम्पादक डा० उनुपम जैन से परिचय हुआ।

लेखों के लिए मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने पंजाव, दिल्ली व राजस्थान का दौरा किया था। श्री महावीर जी जैन शोध संस्थान से संपर्क किया। श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यापीठ वाराणसी के प्रमुख डा० सागर मल जी जैन का हमें अच्छा सहयोग मिला। जैन विश्वभारती लाडनु से भी संपर्क किया। श्री देवकुमार जैन शोध संस्थान आगरा से संपर्क किया। इसी प्रकार एल. डी. शोध संस्थान अहमदावाद से संपर्क किया। सव ओर से अच्छा सहयोग प्राप्त होने लगा।

अव लेखों की व्यवस्थित करने का कठोर कार्य था। हम ने इस कार्य को वांट लिया। साध्वी संतोष जी को साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के प्रवचनों का संकलन करने को कहा गया। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का शिष्य परिवार वर्षों से प्रवचन लिखता आ रहा है। इन प्रवचनों में जो जैन धर्म से संवंधित प्रवचन थे, उनका संकलन साध्वी श्री संतोष जी ने एक महीने में पूरा कर दिया। साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज की परम्परा के वारे में लिखने का कार्य मुख्य संपादिका साध्वी डा० स्मृति जी महाराज को संभाला गया।

सस्मरण इकट्ठे करने का कार्य साध्वी किरणा जी व साध्वी श्री चन्द्र प्रभा जी महाराज ने किया। इसका कारण यह था कि पहले तो विशाल साध्वी मंडल अपने अपने अनुभव लिखेगा। दूसरा अनेकों श्रावक इन्हें अपने अनुभव वताते रहते हैं। तीसरे सभी साध्वीयों ने गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को नजदीक से देखा है। उन्हें सुना है, उनकी आज्ञा का हर प्रकार से पालन किया है। उनकी सेवा की है। इन वातों को ध्यान में रख कर इन खण्डों का

कार्य साध्वी मण्डल को सौंपा गया।

शोध लेखों को सर्व प्रथम हम ने देखा। उसके पश्चात इन लेखों का डा० धर्म सिंह, डा० धर्म चन्द जैन व श्री श्री चन्द सुराणा ने पुर्ननिरिक्षण किया। इस ग्रंथ के प्रकाशन का उतरदायित्व श्री राजेश सुराणा के जिम्मे था। हम ने यह कार्य आगरा से शुरू करवाया। श्री सुराणा ने हमारे शर्त रखी कि "सारा मैटर इकट्ठा प्रकाशित होगा" यह चेलेन्ज हमारे लिए कठिन था। क्योंकि आगरा हमारे लिए ७०० किलोमीटर की दूरी पर था। ८ महीनों में कच्ची मैटर इकट्ठा हो गया। यह मैटर ४०० पन्नों का था। श्री राजेश सुराणा को अम्बाला साध्वी श्री सुधा जी महाराज के समक्ष बुलाया गया। श्री राजेश सुराणा अपने पिता श्री श्री चन्द सुराणा के साथ आए। श्री राजेश सुराणा ने साध्वी श्री स्वर्णकांता जी के प्रथम दर्शन किए थे। प्रथम भेंट में उनकी पुत्रवधू ने साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को गुरू धारण कर लिया। उस दिन से सुराणा परिवार से साध्वी परिवार के अच्छे संबंध बन गए जो भविष्य में काफी सहायक सिद्ध हुए।

पहली मीटिंग में अभिनंदन ग्रंथ की रूप रेखा तैयार हुई। यह तय हुआ कि ऐसा कोई लेख प्रकाशित नहीं होगा जो सम्प्रदायिक तनाव का कारण बने। सारा मैटर प्रकाशन योग्य आगरा सुपुर्द कर दिया गया। ग्रंथ प्रकाशन होना शुरू हो गया। इस की व्यवस्था बहुत सुन्दर थी। प्रेस मे ५ वार प्रुफ पढ़े जाते। अंतिम वार प्रुफ पास करने के लिए हमारे पास आते। हम प्रुफ चैक कर के कोरियर द्वारा आगरा भेज देते। फिर फाईनल पेज छप कर हमारे पास आ जाते। इस प्रकार इस अभिनंदन ग्रंथ का प्रकाशन दो रंगों में हुआ।

यह कार्य ३ महीने चलता रहा। उस के बाद साध्वी श्री के जीवन से संबंधित चित्रों का प्रकाशन शुरू हुआ। चित्र प्रकाशन में मेरी भावना थी कि उपप्रवर्तनी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के क्रान्तिकारी जीवन पर, चित्रों द्वारा प्रकाश डाला जाए। ऐसे आठ चित्र बनाने का निर्णय लिया गया। यह चित्र महासाध्वी के जीवन से संबंधित घटनाओं पर आधारित थे। इन चित्रों का निर्माण आगरा के प्रसिद्ध चित्रकार श्री पुरूषोत्तम सिंह ने किया। समस्त ग्रंथ प्रकाशन नवम्बर में करने का वायदा किया गया। अक्तूबर में दीक्षा महोत्सव आना था। पर तब तक ग्रंथ प्रकाशित नहीं हो सका। यह ग्रंथ जनवरी के पहले सप्ताह में पूर्ण हुआ। हमारा सौभाग्य था कि प्रेरिका साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज व साध्वी श्री सुधा जी महाराज ने हमें इस योग्य समझा कि हम ऐसी दिव्य विभूति को अभिनंदन ग्रंथ के माध्यम से श्रद्धा के पुष्प अर्पण कर सकें। यह काम करने का अपना मजा था। हमें अपनी गुरूणी के आशीवाद का फल मिल रहा था।

एक बात मैं और बता दूं कि स्वयं साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज अभिनंदन ग्रंथ के आयोजन के विरूद्ध थे। पर जब आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने हमारी हां में हां मिलानी शुरू किया फिर आप का विरोध शांत हो गया। उन्होंने हमारी श्रद्धा को स्वीकार कर लिया। अब गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का आशीवाद हमें निरंतर मिल रहा था। इस अवसर पर उन्होंने अपनी एक पुस्तक नन्दन मणियार भी प्रकाशित करवाई। साध्वी किरणा जी ने साध्वी श्री स्वर्णकांता जी का संक्षिप्त परिचय प्रकाशित करवाया। इस अभिनंदन ग्रंथ में श्रावक वर्ग का अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ। यह सहयोग साध्वी श्री सुधा जी

महाराज की प्रेरणा का फल था। इस महान साध्वी ने यह कार्य अपनी गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का आर्शीवाद प्राप्त किया।

इस प्रकाशन के बीच एक बार गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की तबीयत खराब हो गई। पर शाषण देव की कृपा से वह पुनः स्वास्थ्य हो गई। लगभग एक वर्ष से ज्यादा समय में यह अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित हो गया। हमें दो बार आगरा प्रूफ देखने व कुछ चित्रों के मामले में इस ग्रंथ को संपूर्ण कराने के लिए जाना पड़ा।

इस अवसर पर एक पुस्तक महाश्रमण भी प्रकाशित हुई। इस ग्रंथ के कर्त्ता श्री मेजर मुनि जी महाराज हैं। इस ग्रंथ में उपप्रवर्तक श्री सुदर्शन मुनि जी महाराज का परिचय था। जो उस समय समारोह में मौजूद थे।

समारोह की तैयारीयां

इस प्रकार इस अवसर पर ४ ग्रंथ तैयार हो चुके थे। अब समारोह के लिए प्रोग्राम बनाने का कार्य शुरू किया गया। समारोह कैसे करना है ? किस किस को बुलाना है ? कहां करना है ? यह सब प्रश्न हमारे सामने थे। समारोह के मामले में स्थानीय श्री संघ का सहयोग प्राप्त हुआ। अभिनंदन ग्रंथ समारक समिति के सुपुर्द यह काम सौंपा गया। फिर भी प्रोग्राम की रूप रेखा हम दोनों ने तय की। प्रोग्राम २ दिन चलना था। पहले दिन तपस्या का कार्यक्रम था, दूसरे दिन समारोह होना था। यह तय हुआ कि समारोह में विशिष्ट विद्धानों, साध्वीयों, सम्पादक मण्डल का सम्मान किया जाए।

इस समारोह में हम ने अपने विशिष्ट मेहमानों को आमंत्रित करने का निर्णय किया। इस में जज, पोलिस

अफसर व मंत्रीयों को बुलाना शामिल था। आखिर वह दिन भी करीब आ गया जो निश्चत था। इस समारोह की शोभा बढाने के लिए साधु, साध्वीयों को निमंत्रण दिया गया। कुछ ही दिनों में मेंहमानों से संपर्क किया गया। साध्वी श्री का पुण्य प्रताप था कि सभी अतिथियों ने हां कर दी। निमन्त्रण पत्र प्रकाशित करने का कार्य भी आगरा में सम्पन्न हुआ। ५० अभिनंदन ग्रंथ मंगवाए गए। बाकी पुस्तकें भी आ गई थी। जिस में साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की कृति नन्दन मणियार भी थी जो बच्चों के लिए उनकी प्रथम कृति थी।

प्रकरण - ११

हमारे जीवन के कुछ महत्वपूर्ण समारोह

१. आलोकिक समारोह :

जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी होती हैं जो पहली बार ही होती हैं। वैसे तो साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से जो कार्य किया, वह सब पहली बार था। परन्तु अभिनन्दन ग्रंथ का चिंतन आलौकिक था। समारोह तो हमारी श्रद्धा व आस्था का प्रतीक था। मैंने अभिनंदन ग्रंथ के संदर्भ में लिखा है कि एक वर्ष तैयारी करते रहे। उपप्रवर्तनी जिनशाषण प्रभाविका, जैन ज्योति श्री स्वर्णकांता जी महाराज का दीक्षा का ५०वां वर्ष ७ अक्तूबर १९९७ को पूरा हुआ, तब तक अभिनंदन ग्रंथ तैयार नहीं हुआ था। वह दिन तपस्या के रूप में मनाया गया। फिर हमने तय किया कि अभिनंदन ग्रंथ २६ जनवरी १९९८ को उनके जन्म दिन पर समर्पित किया जाए। दिसंबर १९९७ में अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित हो गया।

आखिर २५, २६ जनवरी १९९८ समारोह के लिए तिथि निश्चित हुई। इस दिन के लिए एक अभिनंदन पत्र भी समस्त जैन संस्थाओं की ओर से तैयार किया गया। एक बात में यहां और निवेदन करना चाहता हूं कि हमारा सारा प्रकाशन का कार्य कम्पयूटरपर हुआ था। इस के प्रकाशन में सवच्छता व सुन्दरता का ध्यान रखा गया। इस ग्रंथ के प्रकाशन में साध्वी श्री सुधा जी महाराज के आशीवाद व मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन का श्रम, एक इतिहासक कान

था। सरकारी नौकरी की जिम्मेवारी निभाते हुए इतना वडा गुरुत्तर कार्य सम्पन्न किया था। सरदार (डा०) धर्म सिंह व डा० धर्म चन्द जैन ने स्थानीय विद्वानों से शोध निवंध लिखवाए। सभी विद्वानों को संस्था की ओर से सम्मानित किया गया। यह अभिनंदन ग्रंथ का समारोह था। जिस के माध्यम से हमें अधिकांश विद्वानों से मिलने का सौभाग्य मिला। सारे भारत में निमंत्रण पत्र वांटे गए।

शहर में काफी साधु साध्वीयों का आगमन हो चुका था। श्वेताम्वर तथा गच्छ के आचार्य श्री नित्यानंद जी महाराज विशेष रूप से पधारे थे। हमें अम्वाला में लगातार जाना पड रहा था। हम जो भी प्रोग्राम दिमाग में रखते, वही साध्वी श्री सुधा जी महाराज व साध्वी श्री स्मृति जी महाराज को वता देते। साध्वी जी हमारी वात पर पूरा ध्यान देतीं।

आखिर वह शुभ दिन आ गया जव हमें अपनी गुरुणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के ५० दीक्षा महोत्सव मनाने का अवसरा मिला था। दो दिन से अतिथियों का तांता अम्वाला में लगा हुआ था। मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, पंजाव, हिमाचल, दिल्ली, चण्डीगढ़, के श्रद्धालु अपने अपने वाहनों से आ रहे थे। स्थानीय श्री संघ ने यात्रीयों के लिए समुचित वयवरथा की थी। होटल, धर्मशाला में यात्रीयों के लिए वुक करवा रखी थीं। वाहर से आने वाले श्रावक श्राविकाओं के लिए खाने की समुचित व्यवरथा जैन भवन में थी। २५ जनवरी को तपस्या के साथ साथ अखण्ड जाप भी चल रहा था। जिस में वाहर से आए श्रावक श्राविकाओं ने भाग लिया। इस कारण स्थानक में वहुत भीड़ थी। वहुत सारे पुस्तक वेचने वालों ने पुस्तके व अन्य प्रचार सामग्री के स्टाल लगा रखे थे। दिवाकर प्रकाशन का अपनी पुस्तकों का स्टाल था। जिस में उन्होंने उस दिन विशेष छूट से ग्रंथ वेचने

का प्रबंध किया था।

शाम तक काफी मेहमान व विद्वान आ चुके थे। हर शहरों से एक दिन पहले आने शुरू हो चुके थे। श्रमण श्रमणियों को वन्दन कर धर्म लाभ ले रहे थे। यह अनुपम व अभूतपूर्व अवसर था।

२६ जनवरी १९९८ :

२६ जनवरी जहां भारत का गणतन्त्र दिवस है वहां गुरूणी जी का जन्म दिन भी है। उन का जन्म लाहौर में २६ जनवरी १९२५ को हुआ था। यह महज इतिफाक है कि गुरूणी का जन्म लाहौर में इसी दिन हुआ जब पंडित जवाहर लाल नेहरू ने रावी नदी के किनारे पूर्ण स्वराज्य का नाअरा दिया। जब वह दीक्षा के लिए गुरूणी राजमति के चरणों में प्रस्तुत हुई तो हिन्दु मुस्लिम दंगे बंद हो गए।

सुबह करीब ५० के करीब साधु साध्वीयां पूज्य कांशी राम जैन स्कूल के विशाल प्रांगण में पधारे। यहीं सारा प्रबंध था। खाना पीना व समारोह इसी स्थल पर हो रहा था। इस समारोह में हमारे कुछ घनिष्ट मित्र शामिल हुए। जिनके नाम का उल्लेख करना जरूरी है। यह थे श्री सुभाष गोयल सी.जे.एम. अम्बाला (आज कल एडीशनल सैशन जज फरीदाबाद) श्री जितेन्द्र जैन एस.एस.पी. जालंधर, श्री मदनलाल हसीजा निर्देशक भाषा विभाग पंजाब, डा. धर्म चन्द जैन कुरूक्षेत्र, डा० किरणकला जैन कुरूक्षेत्र, डा० धर्म सिंह पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

आखिर भारतीय श्वेताम्बर स्थानक वासी जैन प्रतिनिधि भी पधारे थे। इस सभा की अध्यक्षता श्री फकीर चन्द्र अग्रवाल उपसभापति हरियाणा विधान सभा ने की थी। वह साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के गुणों से पूर्व परिचय

थे। इस वर्णन उन्होंने अपने भाषण में किया।

समारोह का मंगलाचरण :

साध्वी मण्डल ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् जैन धर्म का पंचरंगा ध्वजा श्री अग्रवाल ने फहराया। फिर स्थानीय संघो के प्रधानों, विद्वानों व सम्पादक मण्डल का समस्त अम्बाला श्री संघ ने बहुमान किया। सभी को विशेष मंच पर बिठाया गया। सभी का परिचय स्थानीय मंत्री जी को दिया गया।

सर्व प्रथम आचार्य नित्यानंद जी महाराज के प्रवचन हुआ। उसके बाद श्री मेजर मुनि जी महाराज ने साध्वी श्री स्वर्णकांता का गुणगान अपने प्रवचनों में किया। साध्वीयों में क्रमशः साध्वी श्री किरणा जी व साध्वी श्री स्मृति जी के प्रवचन हुए। प्रोग्राम की सूची बहुत लम्बी थी। रंगारंग कार्यक्रम के आयोजन अलग था। स्कूल के बच्चों ने साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के जीवन पर एक नाटक दिखाया। जो उनके जीवन की सच्ची झलक प्रस्तुत करता था। फिर सभा के मंत्री ने सभी आगन्तुकों का धन्यावाद किया। अब शुरू हुआ समारोह का मुख्य आकर्षण।

सर्व प्रथम डा० मदन लाल हसीजा निर्देशक भाषा विभाग पंजाब ने अभिनंदन पत्र पढ़ा। अभिनंदन पत्र बहुत से श्री संघ भी लेकर आए थे। सारे अभिनंदन पत्र पढ़ना मुश्किल था। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की दीक्षा स्वर्ण जयंती पर श्री समस्त श्री संघ समर्पित करने के लिए चादरें लाए थे। चादरों के साथ ही अभिनंदन पत्र उन्हें समर्पित किए गए। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ने अस्वस्थ होते हुए भी सारे श्री संघ का धन्यवाद किया।

फिर आया अभिनन्दन ग्रंथ समर्पण का अवसर। सभी सम्पादकों का परिचय मंत्री ने दिया। उनके द्वारा

अभिनंदन ग्रंथ में पाए योगदान की प्रशंसा की गई। फिर सम्पादक मण्डल ने साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को एक बहिन के माध्यम से अभिनंदन ग्रंथ समर्पित किया। यह भव्य समारोह बहुत विशाल था। शायद उतर भारत का विशाल समारोह, जिस में बसों, कारों आये जन समूह की भरमार थी, ऐसा भव्य समारोह शायद ही मैंने पहले देखा हो।

फिर हमारे द्वारा साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को चादर समर्पित की गई। सचित्र कथा का विमोचन गुरूणी के सांसारिक भतीजे श्री कीमती लाल जैन दिल्ली ने किया।

इस अवसर पर हमारा दो दो अलंकरणों से सम्मान किया गया। इस में पहला था श्रावक शिरोमणी, दूसरा विशिष्ट अतिथि का सन्मान था। हमें दो शाल, दो मोमेंटो श्री संघ ने भेंट किए।

इस समारोह में सभी संपादकों शालें भेंट करके किया गया। यह समारोह हमारी साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज के प्रति आस्था का फल था। इस समारोह हमारे द्वारा एक भव्य आयोजन था।

इस निबंध में डा० किरण कला जैन कुरूक्षेत्र को उनके शोध निबंध स्याद्वादमंजरी पर किए शोध कार्य के लिए इंटरनैशनल पावर्ती जैन अवार्ड से सम्मानित किया गया। आप के पति जैन जगत के प्रसिद्ध विद्वान डा० धर्म चन्द जैन हैं। यह अवार्ड काफी समय पहले हमारे द्वारा घोषित हुआ था। आज हमें प्रदान करने का सौभाग्य मिल रहा था। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री जितेन्द्र जैन, श्री सुभाष गोयल के अतिरिक्त सैशन जज, श्री फकीर चन्द अग्रवाल, डा० तेज सिंह गौड, व डा० मदन लाल हसीजा का श्री संघ ने सम्मान किया।

इस प्रकार यह समारोह हमारे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण समारोह था। वैसे देखा जाए तो यह समारोह गुरूणी जी के चरणों में अंतिम समारोह था। उस के वाद के वर्ष में गुरूणी जी अस्वस्थ होने के कारण संथारा ग्रहण कर स्वर्ग सिधार गए।

यह समारोह हमारे सारे समारोहों से इस कारण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यापक स्तर पर मनाया गया। सब से बड़ी बात यह है कि यह समारोह गुरूणी को समर्पित था। उनका इस समारोह में ही अभिनंदन ग्रंथ समर्पित किया गया सभी पधारे श्री संघ के प्रधानों का सम्मान हुआ। विपूल मात्रा में दान इकट्ठा हुआ। उनकी अपनी पुस्तक (चित्रकथा) का विमोचन हुआ। उनके चरणों में चादरों का ढेर लग गया। प्रत्येक चादर उनके प्रति श्री संघ की श्रद्धा व आस्था का प्रतीक थी।

यह समारोह मेरे जीवन में अलौकिक समारोह है। एक प्रकार से यह हमारे साहित्य के २५ वर्ष पूर्ण होने पर हो रहा था। इस समारोह ने मुझे आस्था के नए आयाम प्रदान किए। जैन धर्म व संस्कृति की सेवा के लिए मूझे नया वल, शक्ति, व स्फूर्ति मिली। सभी साध्वीयों की योग्यता का प्रमाण अभिनंदन ग्रंथ द्वारा प्राप्त हुआ। यह समारोह हम दोनों के जीवन में अलौकिक है।

२. अंतराष्ट्रीय संस्था यूनेस्को द्वारा हमारा सम्मान

संयुक्त राष्ट्र संघ का दफतर न्यूयार्क में है। इस संस्था के कई विभाग हैं। संसार के सभी प्रमुख राष्ट्र इस संस्था का सदस्य हैं। इसी का एक विभाग है यूनेस्को। यह संस्था सांस्कृतिक गतिविधियों की विश्व स्तर पर गतिमान है। सन २००० कई वर्षो से महत्वपूर्ण था। एक तो इस सन के वाद नई सदी शुरू होनी थी। दूसरा इसी वर्ष में भगवान महावीर का २६०० साला जन्म महोत्सव मनाने की तैयारी चल रही थी। इस शताब्दी पर युनेस्को ने विद्या, साहित्य व संस्कृति के धरोहर पर काफी कार्य किए। इन कार्यक्रमों समारोह में हिन्दी भाषा की साहित्यक सेवा करने वालों का सम्मान भी शामिल था।

नई दिल्ली में एक १० दिन का अंतराष्ट्रीय हिन्दी सहस्त्रावदी सम्मेलन का आयोजन रखा गया। हर दिन कुछ लेखकों का सम्मान भी इस कार्यक्रम का अंग था। यह समारोह भारत सरकार की विभिन्न हिन्दी सेवी संस्थाओं व यूनेस्कों के सहयोग से शुरू हुआ। इस समारोह में १० दिनों में हिन्दी के विकास पर विभिन्न प्रोग्राम व गोष्टीयां रखी गईं।

इस समारोह पर मुझे व मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन को निमंत्रण मिला। हमारा समारोह एक ही दिन होना था। यह समारोह दीनदयाल उपाध्याय मार्ग के पास अणुव्रत भवन के पास ही आयोजित था। अणुव्रत भवन में हमारा आना जाना रहता है क्योंकि यह स्थल श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ का मुख्यालय है।

इस समारोह में विश्व भर से विद्वान, कवि सम्मिलित होने आए थे। करीबन ८००० लोग इस आयोजन

में दस दिनों में शामिल हुए थे। अधिकांश विद्वान उतरप्रदेश, विहार, मध्यप्रदेश के थे। पर देहली, हरियाणा, चण्डीगढ़ से काफी विद्वान शामिल हुए। पर पंजाब से वहुत कम विद्वान आए हुए थे। जिन्हें सम्मान सहारोह के लिए बुलाया गया था। शायद पंजाव से ५-७ विद्वानों को ही निमंत्रण मिला था।

हमें निमंत्रण तो मिल गया, पर शारीरिक वयवस्था यहां आने की आज्ञा नहीं देती थी। मैंने अपने धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन को एक दिन पहले भेज दिया, ताकि वह स्थान व प्रोग्राम की सूचना प्राप्त कर सके।

मुझे मेरे धर्म भ्राता रविनद्र जैन ने सारे समारोह के आयोजन के वारे में फोन से अवगत करवाया। मैने सोचा यह कार्यक्रम मात्र एक दिन का है। इसी दृष्टि से मैं सुवह ४:०० वजे मंडी गोविन्दगढ़ से रवाना हुआ। मैने अपने धर्म भ्राता रविन्द्र जैन से फोन पर कहा आप सभा स्थल के वाहर के गेट पर खडे रहें। जव मैं घर से चला तो मन में एक अनुपम खुशी थी, कि चलो अव समाज के साथ साथ अंतराष्ट्रीय समुदाय भी हमारे साहित्य को सम्मान की दृष्टि से देखने लगा है। इस स्थल पर हमारी नई हिन्दी कृति सचित्र भगवान महावीर जीवन चारित्र अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शित करना चाहिए। इस दृष्टि कोन को सामने रख कर मैंने यह ग्रंथ की ५ कापीयां तैयार करवाईं। अभी इस ग्रंथ का विमोचन होना वाकी था। मैंने यह ग्रंथ समर्पित करने का मन वनाया था। इस ग्रंथ में अभी कुछ चित्र लगने वाकी थे। जिल्द भी विशेष रूप से तैयार करवाई थी। जल्दी ही ग्रंथ पहुंच गए थे। इस अवसर पर ग्रंथ का महत्व बढ़ गंया था। मैने यह ग्रंथ अपने धर्म भ्राता रविन्द्र जैन के साथ मिलकर हिन्दी में लिखा था। इस ग्रंथ में प्रभु महावीर के ७२ वर्ष का

वर्ष वार व्योरा इतिहासक दृष्टि से लिखा था। जिस का वर्णन मैं पीछे कर चुका हूं।

मैं दिन के करीव १०ऽ३० वजे दिल्ली पहुंच गया। टिकाना मुझे पता था। मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन वडी उत्सुकता और श्रद्धा से मेरा इंतजार कर रहे थे। मैं उसकी श्रद्धा के ३० वर्ष से ज्यादा समय से जानता हूं। वह मुझे जव मिला, तो मुझे २७ फरवरी १९८७ का दिन याद आ गया। जव इसी दिल्ली में मेरा इस· ने एक दिन इंतजार किया था। यह समय राष्ट्रपति भवन में हमारी पुस्तक विमोचन का था। इसी कारण यह इंतजार कर रहा था। मुझे आज वही वेसवरी व इंतजार का ध्यान आ गया। यह इंतजार श्रद्धा का प्रतीक था। यह सुदह से खडा मेरा इंतजार कर रहा था। मैंने फिर स्थल में प्रवेश किया। स्टेज से संपर्क किया। मंत्री को मुख्य मेहमान को सचित्र महावीर जीवन चारित्र ग्रंथ भेंट करने का कार्यक्रम वताया।

मंच संचालक वहुत ही सज्जन थे। उन्होंने कहा आप का ग्रंथ इस शताव्दी का महत्वपूर्ण ग्रंथ है। हिन्दी जगत इस का सर्वत्र स्वागत करेगा। यह समारोह अंतराष्ट्रीय स्तर पर हमारे साहित्य का मुल्यांकन का अच्छा अवसर था। वहुत सारे विद्वानों से मिलने का सौभाग्य मिला।

हम चेयर पर वैठ गए। समारोह शुरू हुआ। अंतराष्ट्रीय समारोह जैसा वातावरण था। पहले संवंधित विषय पर लैक्चर हुआ। फिर लोगों ने वक्ता से प्रश्न पूछे। फिर ऐसा क्रम वना कि वीच वीच में जिन का सम्मान करना था उस का नाम वोला जाता। समारोह के मध्य में हमारा नाम घोषित किया गया।

यूनेस्को ने एक वडा सर्टीफिकेट हमारे नाम से तैयार किया था। वह हम दोनों को अलग अलग भेंट किया

गया। हमारे गले में यूनेस्को का गोल्ड मैडल डाला गया। यह सम्मान हमारा नहीं था, यह सम्मान हमारी साहित्य प्रेरिका साध्वी स्वर्णकांता जी महाराज व साध्वी श्री सुधा जी महाराज का था। जिन की प्रेरणा से पंजाबी जैन साहित्य का नया आयाम खुला। कुछ हिन्दी पुस्तकें तैयार करने का सौभाग्य मिला, जिनका परिचय मैं पुस्तकों के परिचय में दे चुका हूं।

हमारे सम्मान के बाद मंच की ओर से हमारे लिखित ग्रंथ सचित्र भगवान महावीर का गुणगान किया गया। हमारे द्वारा मंच पर मुख्य अतिथियों को यह ग्रंथ भेंट किए गए। इस प्रकार उस दिन जहां हमारा सम्मान हुआ वहां हमें प्रभु महावीर के जीवन चारित्र को प्रथम बार भेंट करने का सौभाग्य मिला। यह समारोह ३ बजे तक चला। फिर खाना खाकर वापस आने का मन बनाया। पर मैं देहली में आचार्य श्री सुशील कुमार जैन आश्रम डिफैंस कालोनी में विराजित आचार्य डा० साधना जी महाराज के दर्शन करना चाहता था। साध्वी साधना जैन जगत की प्रथम पी.एच.डी. साध्वी हैं। अभी अभी उन्होने अपने गुरूदेव आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज पर डी. लिट. भी की है। आचार्य श्री के देवलोक के बाद उन्होंने आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज को अपने कार्य द्वारा अमर बनाया है। उन्होंने दिल्ली में एक गोसदन, चौंक व मार्ग का नामकरण आचार्य श्री सुशील मुनि जी महाराज के नाम से किया। डिफैंस कालोनी में स्थापित अहिंसा साधना मंदिर का निर्माण तेज गति से चल रहा है। इस आश्रम में २४ तीर्थंकरों को समर्पित भगवान ऋषभदेव का मंदिर, आचार्य सुशील मुनि को समर्पित संग्रहालय व समाधि का निर्माण कर रहीं हैं। प्रतिमाओं का निर्माण चल रहा है।

आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज के भारत

में सभी केन्द्रों की आप देख रेख कर रही हैं। आचार्य श्री की बरसी हर साल मनाई जाती है। आप की विद्वता से प्रसन्न होकर आप को इंटरनैशनल पावर्ती जैन अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। आप महान विभूति हैं। सरलात्मा हैं। जैन शासण की प्रभाविका साध्वी हैं। आप का आर्शीवाद हमें १९७४ से प्राप्त हो रहा है। आप कर्मठ साध्वी हैं। जब भी मैं दिल्ली जाता हूं, आप के दर्शन करना अपना परम कर्तव्य समझता हूं। साध्वी श्री साधना जी महाराज हम दोनों के परिवार की सदस्य साध्वी हैं। वह व्यवहार कुशल साध्वी हैं। आप महान विदूषी वक्ता लेखिका हैं। आचार्य श्री सुशील कुमार जी महारज की हर गतिविधीयों से आप जुडी रहती हैं। उनके स्वर्गारोहण के बाद उनकी परम्परा को आप ने संभाला हैं। आप महान हैं अपनी बजुरग गुरूणी की सेवा करना अपना कर्तव्य समझती हैं। आश्रम के विकास के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। दिल्ली के राजनेतिक जगत में उनकी अपनी पहचान है। धर्म नेता, भारत सरकार व राज्य सरकारों के धर्मगुरू व राजनेता आश्रम में आकर आप से विचार विमर्श करते रहते हैं। आप का सारा जीवन देव गुरू धर्म को समर्पित है।

वह विदेशों में धर्म प्रचार करने के लिए जाती रहती हैं। वह गुरूदेव श्री सुशील कुमार जी महाराज के मिशन को आगे बढ़ा रही हैं। वह हर कार्यक्रम में हमें सहभागी बनाती हैं। जीव दया के कार्यों में उनका जीवन समर्पित है। उनकी शिष्या गुरूछाया भी ध्यान व समाधि में प्रवीण समर्पित साध्वी हैं। उनके परिवार से उपाचार्य साध्वी सरलात्मा व नवदीक्षित एक साध्वी और हैं। सभी साध्वीयों में परस्पर प्रेम अविस्मरणीय है।

इस बार भी आश्रम में उनके दर्शन करने गए।

उनका आर्शीवाद प्राप्त कर वापस घर आ गए।

भाषा विभाग द्वारा सम्मान समारोह :

पिछले प्रकरणों में मैंने अपने जीवन में घटित आस्था के विभिन्न आयामों का वर्णन किया है। यह वर्णन मेरी श्रद्धा व भक्ति का प्रतीक है। जीवन में हर पल हर क्षण कुछ ऐसा घटित होता है। जिसे जीवन भर भुलाना असंभव रहता है। कुछ ऐसी घटनाएं घटित होती हैं तो जीवन का अभिन्न अंग बन जाती हैं। ऐसी घटनाएं होती हैं जो जीवन पर अमिट छाप छोड़ जाती हैं। ऐसी ही घटनाओं में एक घटना है भारत सरकार की साहित्य अकैडमी से हमारे संवंध वनना।

एक दिन अंग्रजी के अखबार 'द ट्रिव्यून' में एक विज्ञापन देखा। उस में लिखा था कि "अगर आप लेखक हैं तो अपना वायोडाटा और अपने प्रकाशन की दो प्रतियां भेजीए। हमारा प्रकाशन Who's & Who प्रकाशित हो रहा है। उस में हम आप का नाम दर्ज करेंगें।"

मैने इस विज्ञापन को ध्यान से देखा फिर सोचा अगर हम अपना स्व-परिचय भिजवा दें, तो कोई नुकसान नहीं। मैंने इस संदर्भ में अपने धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन से वात की। उस ने हामी भर दी। फिर अंगंजी भाषा में हम ने अपना स्व-परिचय इस ग्रथ को भेजा।

हमें इस के लाभ का बाद में पता चला। कुछ ही समय के वाद हमारा भेजा परिचय प्रकाशित हो गया। चाहे इसे प्रकाशित होने में काफी समय लगा। हमें इस के प्रूफ प्राप्त हो गए। दो खण्डों में प्रकाशित इस महाकाया ग्रंथ में भारत के ८००० से ज्यादा विभिन्न भाषाओं के लेखकों का परिचय व पता दिया हुआ है। इस के प्रकाशन में ३ वर्ष से ज्यादा समय लगा। पर यह एक अच्छा उपक्रम था। इस के

माध्यम से भारत सरकार को प्राकृत भाषा से पंजाबी में अनुवाद ग्रंथों का परिचय मिला। यही नहीं, विभिन्न धार्मिक व समाजिक संस्थाओं ने हमारे कार्यों को देख कर हमारा सम्मान किया। सम्मानों का क्रम बहुत लम्बा है। मैं सब से बडा सम्मान राष्ट्रपति ज्ञानी जैन सिंह द्वारा राष्ट्रपति भवन में पुरातन पंजाब विच जैन धर्म के विमोचन को समझता हूं। एक राष्ट्र प्रमुख मेरे जैसे जैन धर्म के सेवक का सम्मान जैन धर्म के प्रति की सेवाओं के लिए करे, यह बात छोटी नहीं। पर सम्मानों का सिलसिला तब शुरू हुआ था, जो निरंतर जारी है। कई लेखक सभाएं व समाजिक संस्थाएं मेरा व मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन का सम्मान कर चुकी हैं। इस सब के पीछे साहित्य अकैडमी के इस ग्रंथ का बहुत बडा हाथ है। मेरे अगले अध्ययन में कुछ विशेष समारोहों का वर्णन करूंगा, जो हमारी आस्था का फल कहे जा सकते हैं।

जीवन में कुछ घटनाएं सहज ही घटित हो जाती हैं। ऐसी ही घटना है भाषा विभाग पंजाब द्वारा हमारा सम्मान। भाषा विभाग से हमारे परिचय उस समय हुआ, जब यहां से हमें पंजाब विश्वकोष में जैन प्रविष्टीयां लिखने को कहा गया। हमारा परिचय सहायक निर्देशक डा० मदन लाल हसीजा से हुआ। श्री हसीजा मृदुल स्वभाव के सज्जन हैं। एक दो भेंट के बाद लगा कि वह विद्वानों का बहुत सम्मान करते हैं। हम करीबन ४ साल इस कोष के लिए ऐंटरी लिखते रहे। यह कोष अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ। इस में पंजाब से संबंधित महापुरूषों, स्थानों, स्मारकों का परिचय है। वैसे हमे पंजाबी विश्वकोष में जैन धर्म और आचार्य श्री सुशील कुमार जी ऐंटरी लिखने को कहा गया था। जिसे हमने लिखा। पर किसी कारण अभी तक यह ऐंटरी प्रकाशित नहीं हुई। इसी विभाग के एक सज्जन श्री ओ.पी. आनंद

दिल्ली से हमारा परिचय श्री हसीजा ने करवाया था। हमारे सूत्रकृतांग के लिए उनका संदेश उनके स्नेह का प्रतीक है। साध्वी श्री स्वर्णकांत जी महाराज व आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज के प्रति उनके मन में गहरा सम्मान है।

श्री हसीजा लम्बे अंतराल के बाद भाषा विभाग के निर्देशक बने। वह हमेशा इच्छा रखते थे कि पंजाब सरकार की ओर से जैन विद्वानों का सम्मान किया जाए। पर उनके मन में जब भी कार्यक्रम बनता तो कोई न कोई रूकावट आ जाती थी। हमारे लेखन के २५ वर्ष पूरे हो चुके थे। श्री हसीजा डायरेक्टर पद पर सुशोभित हो चुके थे। उन्होंने हमारे सम्मान करने का केस पंजाब सरकार के समक्ष रखा। यह सम्मान पंजाबी जैन साहित्य के २५ वर्ष पूर्ण होने पर था। श्री हसीजा एक ऐसा अवसर देख रहे थे जहां महान जन समूह हो। उन्हें ऐसा मौका मिल गया। फतिहगढ़ साहिब शहीदों की धरती है। जहां दशमेश पिता श्री गुरू गोविन्द सिंह जी के दो सपुत्रों को मुगलों ने दीवारों में चिनवाया दिया था। उस स्थान को श्री टोडर मल जैन ने मोहरें बिछा कर खरीदा था। इस कारण सिक्ख धर्म का जैन धर्म से काफी करीबी संबंध हो गया था। पटना साहिब की जिस हवेली में गुरू जी का जन्म हुआ था वह भी एक जैन श्रावक की थी। आज भी एक ही परिसर में प्राचीन जैन मंदिर व गुरूद्वारा स्थित हैं। आज उसी धरती पर गुरूद्वारा साहिब स्थित हैं। गुरूद्वारे में विशाल टोडर मल जैन हाल है जो भव्य पुरूष की भव्य स्मृति है।

सरहिंद एक प्राचीन नगर :

सरहिंद शहर वर्तमान में फतिहगढ़ साहिब जिला